टिप्पणी

5

रॉबर्ट नर्सिंग होम में

आप कभी-न-कभी किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में अवश्य गए होंगे। वहाँ आपने यह ध्यान दिया होगा कि किस तरह कुछ लोग रोगियों तथा पीड़ितों की सेवा करते हैं। ऐसे दृश्य आप में भी दूसरों के लिए कुछ कर पाने की इच्छा जगाते होंगे। अपनों की सेवा तो सभी करते हैं, पर बड़ी बात तो तब है, जब दूसरों के लिए भी कुछ किया जाए। दूसरों के लिए कुछ करने की भावना से भरे लोग जाति, क्षेत्र, भाषा, धर्म, लिंग व रंग आदि के बंधन को नहीं मानते। वे तो बस यह मानते हैं कि मनुष्य-मनुष्य में भेद कैसा? मनुष्य तो मनुष्य है, वह और कुछ हो ही नहीं सकता। आइए, इस पाठ के माध्यम से ऐसी ही भावना रखने वाले लोगों के विषय में जानने एवं उनसे प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- मानव-जीवन में सेवा-भाव और करुणा, प्रेम तथा उदारता के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- क्षेत्र, भाषा, जाति, धर्म एवं रंग-भेद आदि के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विश्व-स्तर पर त्याग व समर्पण के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान के विषय में बता सकेंगे;
- पाठ की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- रिपोर्ताज विधा का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

5.1 मूल पाठ

कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक हो गया; क्योंकि मेरी आतिथेया अचानक रोग की लपेट में आ गईं और उन्हें इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में लाना पड़ा।

यह है सितंबर, 1951 !

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घिरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंक कर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेश में आच्छादित नारी कमरे में आ गई है।

देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता-सधा।

''लंबा मुँह अच्छा नहीं लगता, बीमार के पास लंबा मुँह नहीं,'' आते ही उन्होंने कहा। साफ़-सुथरी भाषा, उच्चारण साफ़ और स्वर आदेश का; पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में।

हाँ, वे माँ ही थीं: होम की अध्यक्षा मदर टेरेसा, मातृभूमि जिनकी फ्रांस और कर्मभूमि भारत! उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही !

उन्होंने रोगी के दोनों म्लान कपोल अपने चाँदनी-चर्चित हाथों से थपथपाए तो उसके सूखे अधरों पर चाँदी की एक रेखा खिंच आई और मुझे लगा कि वातावरण का तनाव कुछ कम हो गया।

तभी एक खटाक और हमारा डॉक्टर कमरे के भीतर। मदर ने उसे देखते ही कहा—''डॉक्टर, तुम्हारा बीमार हँस रहा है।''

''हाँ, मदर ! तुम हँसी बिखेरती जो हो,'' डॉक्टर ने अपने जाने कितने अनुभव यों एक ही वाक्य में गूँथ दिए।

मैंने भावना से अभिभूत हो सोचा—जो बिना प्रसव किए ही माँ बन सकती है, वही तीस रुपये मासिक पर बीस वर्ष से दिन और रात सेवा में लग सकती है और वही पीड़ितों के तड़पते जीवन में हँसी बिखेर सकती है।

चित्र 5.1

शब्दार्थ

परिचारक	-	रोगी की सेवा करने वाला
आतिथेया	-	मेज़बान (अतिथि का सत्कार करने वाली)
आघात	-	हमला, चोट
विशिष्ट	-	विशेष
पैंतालिस बसंत देखना	-	पैंतालिस वर्ष की उम्र
धवल	-	सफ़ेद
आच्छादित	-	ढकी हुई
हिम-श्वेत	-	बर्फ़ के समान सफ़ेद
अरुणोदय	-	सूर्योदय
अनुरंजित	-	रँगी हुई
सुता-सधा	-	छरहरा
अधिनायक	-	तानाशाह
शिकंजा	-	जकड़ने या कसने वाला
तरुणाई	-	युवावस्था
तल्लीन	-	तन्मय/निमग्न
म्लान	-	मुरझाया हुआ/फीका
कपोल	-	गाल
चाँदनी-चर्चित	-	चाँदनी की आभा वाले
धाम	-	ठिकाना
राग	-	लगाव
चाव	-	शौक
अधरों	-	होंठों
अभिभूत	-	डूबकर
प्रसव	-	बच्चे को जन्म देना
हँसी बिखेरना	-	खुशी देना

तीसरे पहर का समय, थर्मामीटर हाथ में लिए वे आईं—मदर टेरेसा और उनके साथ एक नवयुवती, उसी विशिष्ट धवल वेश में, गौर और आकर्षक। हाँ, गौर और आकर्षक, पर उसके स्वरूप का चित्रण करने में ये दोनों ही शब्द असफल। यों कहकर उसके आस-पास आ पाऊँगा कि शायद चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो। रूप और स्वरूप का एक दैवी साँचा-सी वह लड़की। नाम उसका क्रिस्ट हैल्ड और जन्मभूमि जर्मनी।

फ़्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ—एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

''तुम्हारा देश महान है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे-जैसी सेवाशील बालिका को भी,'' मैंने उससे कहा, तो दर्प से दीप्त हो वह स्टेच्यू हो गई और अपना दाहिना पैर पृथ्वी पर वेग से ठोंककर बोली— ''यस-यस।''

वह दूसरे कमरे में चली गई, तो मदर टेरेसा को टटोला, ''आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?''

बोली, ''हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और मैं भी, फिर प्यार क्यों न हो?''

चित्र 5.2

मैंने नश्तर चुभाया— ''पर फ़्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?''

नश्तर तेज़ था, चुभन गहरी; पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं— ''हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी, पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी; हम दोनों एक।''

'हम दोनों एक'—मदर टेरेसा ने इतने गहरे डूब कर कहा कि जैसे मैं उनसे उनकी लड़की छीन रहा था और उन्होंने पहले ही दाँव में मुझे चारों खाने दे मारा। मदर चली गईं, मैं सोचता रहा। मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं— ऊँची दीवारें, मज़बूत फ़ौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें, जाति-वर्ग की दीवारें। कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय।

टिप्पणी

शब्दार्थ

गौर	-	गोरा
दैवीय	-	अलौकिक
दुहिता	-	बेटी
ध्येय	-	उद्देश्य
दर्प	-	गर्व
दीप्त	-	दमकती
स्टेच्यू	-	मूर्ति
नश्तर	-	धारदार औज़ार (जैसे चाकू, उस्तरा आदि)
पद-दलित	-	पैरों से कुचला, रौंदा
चारों खाने दे मारना	-	पराजित कर देना
फ़ौलादी	-	लोहे की तरह मज़बूत
नगण्य	-	जो गिनने लायक न हो (यहाँ मामूली)

व्रत	– संकल्प/निश्चय
नम	– भीगा
फटी आँखों से	– हैरानी से/आश्चर्य से
असह्य	– जिसे सहा न जा सके
कूजे की मिसरी	– साँचे वाली मिसरी
सौम्य	– शालीन
उत्सर्ग	– त्याग/बलिदान

क्रिस्ट हैल्ड के पिता जर्मनी में एक कॉलेज के प्रिंसिपल हैं और उसने अभी पाँच वर्षों के लिए ही सेवा का व्रत लिया है।

रोगिणी के गहरे काले बाल देखकर उसने कहा, ''तुम्हारे काले बाल मेरे पिता के से हैं।'' कहा और स्मृतियों में खो-सी गई।

मुझे लगा कि मैं ही क्रिस्ट हैल्ड हूँ। अपने माता-पिता से हज़ारों मील दूर, एक अजनबी देश में, अकेली, खोई, छली-सी और मेरी आँखें भर आईं।

लड़की मेरे आँसुओं में डूब-डूब गई और किनारा पाने को उसने जल्दी से उन्हें अपने रुमाल से पोंछ दिया। उसकी सदा हँसती आँखें, नरम हो आईं, पर ज़रा भी नम नहीं। मैंने पूछा, ''घर से चलते समय रोई थीं तुम?'' उसका भोला उत्तर था, ''न, माँ बहुत रोई थी।''

फटी आँखों से कुछ देर उसे मैं देखता रहा, तब कुछ बिस्किट उसे भेंट किए। बोली, ''धन्यवाद, थैंक यू, तांग शू।'' वह अक्सर हिंदी, अंग्रेज़ी, जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है।

हम सब हँस पड़े और वह हँसती-हँसती भाग गई।

मदर टेरेसा बातों के मूड में थीं। मैंने उनके हृदय-मानस में चोर दरवाज़े से झाँका—''मदर, घर से आने के बाद फिर आप घर नहीं गईं, कभी मिलने-जुलने भी?'' कान अपना काम कर चुके थे, वाणी को अपना काम करना था, पर मदर ने उसकी राह मोड़ दी और तब मैंने सुनी यह कहानी।

कई वर्ष हुए। फ्रांस में विश्व-भर के पूजा-गृहों का एक सम्मेलन हुआ। भारत की दो मदर भी प्रतिनिधि होकर उस सम्मेलन में गईं। वे फ्रांस की ही थीं, उनके माता-पिता फ्रांस में ही थे। उन्हें पता था कि बरसों बाद हमारी पुत्रियाँ आ रही हैं।

दोनों माताएँ अपनी पुत्रियों का स्वागत करने जहाज़ पर आईं, पर विचित्र बात यह हुई कि वे दोनों अपनी पुत्रियों को पहचान न पाईं और आपस में कहती रहीं कि तुम्हारी बेटी कौन-सी है। अंत में उनका नाम पूछा और तब गले मिलीं।

कहानी पूरी हुई, तो कई प्रश्न उठे, पर मदर टेरेसा उनके उठते-न-उठते भाग गईं। निश्चय ही उन दोनों अनपहचानी पुत्रियों में से एक वे स्वयं थीं।

बस इतना ही एक दिन मैं उनसे और कहला सका—''घर से बहुत चिट्ठी आती हैं, तो मैं यहाँ के किसी स्थान का फ़ोटो भेज देती हूँ।''

रोग पूरे उभार पर था, रोगी के लिए असह्य। मदर टेरेसा ने कहा, ''तुम्हारे लिए आज विनती करूँगी।'' उनका चेहरा उस समय भक्त की श्रद्धा से आलोकित हो उठा था।

रोगी ने कहा, ''कल भी करना मदर।'' मदर के स्वर में मिसरी-ही-मिसरी, पर मिसरी कूजे की थी, जो मिठास तो तुरंत ही देती थी, पर घुलती तुरंत नहीं और बल का प्रयोग

हो, तो मुँह तक को छील देती है। बोलीं, ''न, कल उसके लिए करूँगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।'' जैसे हज़ार वाट का बल्ब मेरी आँखों में कौंध गया।

चित्र 5.3

मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, बहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था, पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों से देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाए और किसी का उत्सर्ग सदा किसी की पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

ऊपर के बरामदे में खड़े-खड़े मैंने एक जादू की पुड़िया देखी– जीती जागती जादू की पुड़िया। आदमियों को मक्खी बनाने वाला कामरूप का जादू नहीं, मक्खियों को आदमी बनाने वाला जीवन का जादू– होम की सबसे बुढ़िया मदर मार्गरेट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सके, पर उनकी चाल में गज़ब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में मस्ती; हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी और काम यों कि मशीन मात माने। भारत में चालीस वर्षों से सेवा में रसलीन, जैसे और कुछ उन्हें जीवन में अब जानना भी तो नहीं!

ऑपरेशन के लिए एक रोगी आया, ऐश-आराम में पला जीवन। कहने की बेचारे को आदत, सहने का उसे क्या पता? पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?

''मदर मर जाऊँगा,'' उसने विह्वल होकर कहा।

वातावरण चीत्कार की विह्वलता से भर गया, पर बूढ़ी मदर की हँसी के दीपक ने झपकी तक नहीं खाई। बोलीं, ''कुछ नहीं, कुछ नहीं, आज है ऐवरीथिंग (सब कुछ), कल समथिंग (कुछ-कुछ) और बस, तब नथिंग (कुछ नहीं)'' और वे इतने ज़ोर से खिलखिलाकर हँसीं कि आस-पास कोई होता, तो झेंप जाता।

एक रोगी उन्होंने देखा–चिंता के गर्त से उठ-उभरती रोगिणी। ज़ोर से चुटकियाँ बजाकर वे किलकीं– ''जी-उती, जी-उती।'' अर्थ है– जी-उठी, जी-उठी।

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है, वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुस्कानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की ! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का तबादला हो गया–अब वह धानी के भील सेवा-केंद्र में काम करेगी। ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका; पर कर्पूरिका तो अपने सौरभ में इतनी लीन है कि उसे स्वर्ग के अतिरिक्त और कुछ दिखता ही नहीं।

टिप्पणी

कामरूप	– असम का प्राचीन नाम
रसलीन	– आनंद में डूबी
विह्वल	– बेचैन
चीत्कार	– पीड़ा से चीखना
झेंप	– लाज, शरम, संकोच (शरमाना)
गर्त	– गहराई, (गड्ढा)
उत्फुल्ल	– खिली हुई/प्रसन्न
लक्ष्यदर्शी	– उद्देश्यपूर्ण
सेवानिरत	– सेवा में लगा हुआ
कर्पूरिका	– कपूर जैसी गोरी देह वाली
सौरभ	– सुगंध/खुशबू

निस्संग	– तटस्थ, अलग
निर्द्वंद्व	– द्वंद्व से रहित
मानस–चक्षु	– मन के नेत्र
कृतार्थ	– धन्य

वह हम लोगों को मिलने आई—हँसती, खिलती, बिखरती और कुदकती। यहाँ से जाने का उसे विषाद नहीं, एक नई जगह देखने का चाव उसके रोम-रोम में, पर मुझे उसका जाना कचोट-सा रहा था। वह दूसरे रोगियों से मिलने चली गई।

इधर-उधर आते-जाते वह दो-तीन बार कमरे के बाहर से निकली, पर फिर एक बार भी उसने उधर नहीं झाँका। मैंने अपने से कहा, ''कोई लाख उलझे, उसे किसी में नहीं उलझना है।'' और तब सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का, सच यह है कि सिस्टर-मदर वर्ग का निस्संग, निर्लिप्त, निर्द्वंद्व जीवन पूरी तरह मेरे मानस-चक्षुओं में समा गया और फिर मैंने आप ही आप कहा—''सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड, हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुईं।''

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी' के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहता है?

   (क) सौंदर्य ☐ (ख) मौसम ☐

   (ग) उम्र ☐ (घ) चुस्ती-फुर्ती ☐

2. हिटलर को मदर ने बुरा कहा, क्योंकि वह—

   (क) फ्रांस को जीतना चाहता था ☐ (ख) नफ़रत फैला रहा था ☐

   (ग) जर्मनी का रहनेवाला था ☐ (घ) स्त्री-विरोधी था ☐

3. 'काम यों कि मशीन मात माने' का आशय है—

   (क) सभी उपकरण चलाने का कौशल ☐ (ख) शीघ्रता से काम कर लेना ☐

   (ग) मशीनों को बुरा मानना ☐ (घ) मशीनों से भी तेज़ काम करना ☐

आइए समझें

आइए, अब इस पाठ को तीन अंशों में बाँटकर समझने का प्रयास करते हैं।

टिप्पणी

5.2.1 अंश-I

कल तक जिनका...पर कितनी अजेय।

पाठ के आरंभ में लेखक ने इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम का उल्लेख किया है। इस नर्सिंग होम में लेखक अपने किसी जानकार को बीमार होने पर, इलाज के लिए लेकर जाता है। यहीं पर उसने पहली बार मदर टेरेसा और क्रिस हैल्ड को देखा। लेखक इन दोनों के रूप-सौंदर्य तथा रोगियों के प्रति इनकी आत्मीयता और सेवा-भावना से बहुत प्रभावित, प्रेरित हुआ। इसके साथ ही लेखक यह व्यक्त करता है कि मानवता की सेवा करने वालों का हृदय एक होता है, वे मनुष्य-मनुष्य के बीच खड़ी की गई दीवारों को ढहा देते हैं। इस अंश में इन बातों का ऐसा वर्णन किया गया है मानो पाठक के सामने प्रत्यक्ष घटित हो रहा हो।

मदर टेरेसा का नाम तो हम सब जानते ही हैं। लंबे कद व गोरे रंग वाली टेरेसा सफ़ेद साड़ी पहने माँ की मूर्ति जैसी दिखती थीं। लेखक ने जब इस नर्सिंग होम में मदर को देखा, उस समय मदर की आयु लगभग 45 वर्ष की होगी। लेखक ने मदर टेरेसा के रोग्रस्त वातावरण में आने और उनकी उम्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व का आँखों देखा वर्णन किया है। निम्नलिखित उद्धरण पर ध्यान दीजिए– ''देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता–सधा।''

इस वर्णन को पढ़कर मदर का चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। बर्फ की तरह सफेद रंग पर उगते हुए सूर्य की किरणें पड़ें तो बर्फ का रंग लालिमायुक्त हो जाता है– ऐसा ही आकर्षक रूप था मदर का।

मदर नहीं चाहती थीं कि रोग, विपत्ति तथा अन्य कष्ट हमारे समाज में बचे रहें। मदर ने इनमें से एक क्षेत्र चुन लिया। वे रोगियों की सेवा करने लगीं। मदर जब किसी को कुछ कहतीं तो वह किसी तानाशाह व अधिकारी का आदेश न होता, बल्कि सहृदय माँ की ममता उसमें झलकती थी। जैसे कभी आपकी माँ भी आपको डाँटती होंगी, पर उस डाँट में उनका स्नेह समाया होता है।

जैसे आप अपनी माँ के स्पर्श मात्र से खुश हो जाते हैं, वैसे ही मदर टेरेसा के स्पर्श से रोगी अपनी पीड़ा भूलकर हँसने लगते थे। एक स्थान पर मदर के स्पर्श के प्रभाव का उल्लेख किया गया है। कष्ट से ग्रस्त रोगियों को मदर का स्पर्श-मात्र ठंडक पहुँचा देता था। पीड़ितों को खुश देखने के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। स्वयं बच्चे को जन्म दिए बिना भी किसी नारी में इतना ममत्व व इतनी करुणा हो सकती है, यह मदर टेरेसा को देखकर पता चलता है। सारा संसार उन्हें माँ कहता है, क्योंकि टेरेसा के लिए सभी उनके अपने बच्चे थे। चाहे, उन्होंने किसी संतान को जन्म न दिया हो पर उनके लिए संतान की कमी न थी। और संतान भी कैसी, जिसे माँ की औरों से ज्यादा ज़रूरत हो।

राबर्ट नर्सिंग होम में

इसी नर्सिंग होम में लेखक ने मानव-सेवा को समर्पित एक और महिला को देखा। वह भी बहुत आकर्षक थी। ऐसा स्वरूप, जैसे कोई देवी हो! जर्मनी में जन्मी क्रिस्ट हैल्ड भी मदर टेरेसा के साथ ही रॉबर्ट नर्सिंग होम में रोगियों की निःस्वार्थ-भाव से सेवा करती थीं। क्रिस्ट हैल्ड के व्यक्तित्व और सौंदर्य का भी वैसा वर्णन ही लेखक ने किया है, जैसा मदर का किया था। जिन शब्दों में यह चित्रण किया गया है, उन पर आपका अपने आप ही ध्यान गया होगा।

हम सब जानते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी और फ्रांस एक-दूसरे के घोर विरोधी थे। दोनों एक दूसरे के विरूद्ध लड़े भी थे। लेखक को इस बात पर थोड़ा आश्चर्य होता है कि फ्रांस की मदर टेरेसा और जर्मनी की क्रिस्ट हैल्ड यहाँ एक साथ, एक कर्म, एक ध्येय लिए मानव सेवा में लीन थीं। लेकिन हम यह जानते हैं कि त्याग-तपस्वी, निस्वार्थ-भाव से काम करने वाले लोग प्रत्येक देश में होते हैं। जर्मनी में हिटलर ने ही जन्म नहीं लिया, विश्व का भला करने वाले वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, चिकित्सकों आदि ने भी वहाँ जन्म लिया है। मानवता की सेवा करने वाली क्रिस हैल्ड भी वहीं की हैं। इसीलिए लेखक क्रिस हैल्ड से कहता है– "तुम्हारा देश महान है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे जैसी सेवाशील बालिका को भी।"

चित्र 5.4

लेखक मदर से थोड़ी चुटकी लेता है। मदर के साथ लेखक की यह बातचीत बहुत रोचक है, साथ ही हमें प्रेरणा भी देती है। कभी-कभी हमें यह गलतफ़हमी हो जाती है कि यदि दो देशों के बीच राजनीतिक संबंध ठीक नहीं होते तो उनकी जनता के बीच के संबंध भी खराब हो जाते हैं। ऐसा नहीं होता। रॉबर्ट नर्सिंग होम में फ्रांस की मदर टेरेसा और जर्मनी की क्रिस हैल्ड एक होकर काम करती हैं। मदर के साथ लेखक के इस संवाद को पढ़िए–

"आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?"

बोली, 'हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और मैं भी, फिर प्यार क्यों न हो?" मैने नश्तर चुभाया–" पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?"

नश्तर तेज़ था, चुभन गहरी; पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं– "हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी, पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी; हम दोनों एक।"

जानते हैं न कि युद्ध में किसी का भला नहीं होता। हिटलर ने युद्ध छेड़ा तो उससे मदर के देश का तो नुकसान हुआ ही, स्वयं हिटलर के देश की वासिनी क्रिस हैल्ड का भी घर गिरा। संकट और दुख एकता स्थापित करता है। मदर इस सचाई को जानती हैं और वे क्रिस हैल्ड के साथ एक होकर दुखियों की सेवा करती हैं।

अब आप ही सोचिए कि क्या किसी व्यक्ति से इस कारण द्वेष रखना उचित है कि वह किसी अन्य देश व धर्म का है? मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद कैसा? क्या हम किसी को जाति, धर्म, भाषा और रंग के आधार पर बाँट सकते हैं? न जाने ऐसी कितनी ही दीवारें हमने खड़ी कर रखी हैं जो सारी मनुष्य जाति को एक परिवार नहीं बनने देतीं। हम केवल मानव हैं, न कि मराठी-गुजराती या हिंदू-मुस्लिम या ब्राह्मण-क्षत्रिय। बाँटने वाली ये दीवारें गिरानी होंगी तभी सबका कल्याण संभव है। वैसे भी भारतीय दर्शन में पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में माना गया है।

क्रियाकलाप-5.1

'प्रयास', 'हेल्पेज़ इण्डिया' तथा 'केयर' जैसी अनेक संस्थाएँ समाज के लिए अपना योगदान दे रही हैं। आपके आस-पास या आपके इलाके में भी कुछ ऐसी संस्थाएँ होंगी जो निःस्वार्थ भाव से अनाथों, बूढ़ों व विकलांगों अथवा पशु-पक्षियों की सेवा कर रही हैं। ऐसी कुछ संस्थाओं (कम-से-कम दो) की जानकारी एकत्रित करें। उनमें से आप किसके कार्य में योगदान देना चाहेंगे और क्यों?

	संस्था का नाम	योगदान के क्षेत्र
•	....	....
	....	....
•	....	....
	....	....
•	....	....
	....	....

5.2.2 अंश-2

क्रिस्ट हैल्ड के पिता...पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

पाठ के इस दूसरे अंश में क्रिस हैल्ड और मदर टेरेसा की पारिवारिक पृष्ठभूमि का थोड़ा–सा परिचय दिया गया है। घर में इन दोनों को भरपूर स्नेह मिला पर ये दोनों अपने-अपने परिवारों को छोड़कर हज़ारों मील दूर मनुष्यता की सेवा करने निकल पड़ीं। इस अंश में यह भी बताया गया है कि ये दोनों–विशेष रूप से मदर कर्त्तव्यपरायणता से सेवा करती हैं और इसे लेकर वे भावुक कभी नहीं होतीं–इससे उनकी सेवा का लाभ उसे मिलता है जिसे उसकी सबसे अधिक ज़रूरत होती है।

ऐसा हमारे साथ भी होता है कि हमें या हमारे माता-पिता को रोज़गार की तलाश में अपने परिवार, अपने गाँव-शहर या देश से दूर जाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मुख्यतः आजीविका कमाना हमारा उद्देश्य होता है, पर क्रिस्ट हैल्ड का उद्देश्य मानव की सेवा करना था। यही है जीवन का महान उद्देश्य। हमें भी स्वार्थ को त्यागकर दूसरों के लिए कुछ करना चाहिए और ऐसा हमें उत्साह से करना चाहिए, जैसा क्रिस्ट किया करती थीं। काम में लगी हुई क्रिस्ट कभी-कभी भावुक हो जाती हैं। कब? तब जब किसी को देखकर उसे घर की याद आती है, लेकिन वह फौरन संभलकर सेवा में लग जाती हैं। लेखक ने क्रिस्ट की इस भावदशा का बहुत ही भावपूर्ण उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि क्रिस्ट हैल्ड की आँखें नरम हो आईं, पर ज़रा भी नम नहीं हुईं, अर्थात् घर की याद ने क्रिस्ट हैल्ड को थोड़ा भावुक तो बना दिया, पर उसने आँखों में पानी नहीं आने दिया। जर्मनी में जन्म लेने के कारण वे जर्मन भाषा, अंग्रेज़ी भाषा का अध्ययन करने के कारण अंग्रेज़ी और भारत में रहने के कारण हिंदी भी थोड़ी-बहुत बोल लेती थीं। कोई भाषा उनके काम में बाधा नहीं बनती थी। हर किसी की आवश्यकता को समझते हुए उनका अच्छी तरह ध्यान रखती थीं।

यह तो हुई बात क्रिस्ट हैल्ड की। अब थोड़ा मदर टेरेसा के बारे में भी जान लें। वे भी तो फ़्रांस में रहने वाले अपने परिवार को छोड़कर भारत में रहने लगी थीं। लेखक ने उनसे पूछा कि वे अपने घर वापस क्यों नहीं गईं? उन्होंने कहा कि वे कई वर्षों बाद एक बार गई थीं पर उनकी माँ उन्हें पहचान ही नहीं पाईं। बात यह थी कि मदर की वेशभूषा व सेवा-कर्म ने उन्हें इतना बदल जो दिया था। मदर ने यह भी बताया कि घर से बहुत पत्र आते हैं पर उनके जवाब में वे यहाँ की कुछ तस्वीरें यानी फोटो भेज देती हैं। सोचिए, वे ऐसा क्यों करती होंगी। शायद वे बिना कुछ लिखे, बहुत कुछ दिखला देना चाहती थीं। ऐसा माना भी जाता है कि चित्र बात को और अधिक प्रभावी ढंग से स्पष्ट कर देते हैं। यहाँ किए गए काम को दिखाकर वे अपने परिवार को अपनी कुशलता की सूचना पहुँचा दिया करती थीं। यहाँ के लोगों को उनकी आवश्यकता अधिक थी। चित्रों को देखकर परिवार गर्व करता होगा।

आप प्रार्थना, दुआ या अरदास तो ज़रूर करते होंगे। ईश्वर से कुछ-न-कुछ माँगते भी होंगे। जो कुछ हम माँगते हैं वह अपने और अपनों के लिए होता है। कई बार हमारी मन्नतें पूरी होती हैं, तो कई बार नहीं भी। माना जाता था कि मदर की हर माँग ईश्वर पूरी करते थे। उनकी प्रार्थना का बहुत असर होता था। वह इसलिए कि वे अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए माँगती थीं। सभी की पीड़ा को वे अपनी पीड़ा मानती थीं। उसके कष्टों को दूर करने के लिए दिन-रात एक कर देतीं और उसके लिए प्रार्थना करती थीं। हुई न यह बड़ी बात! इसे ही समानुभूति कहते हैं। आप भी बहुत से मित्र बना लेते होंगे। धन के बल पर बहुत से सेवक रख सकते हैं पर किसी की सेवा कर उसे अपना बना लेना यह है बड़ी बात। यही तो किया मदर टेरेसा व क्रिस्ट हैल्ड ने। आइए, अंतिम अनुच्छेद को एक बार फिर से समझें—